International Indexed & Referred Research Journal, November, 2012, ISSN 0974- 2832, RNI- RAJBIL- 2009/29954; VoL IV * ISSUE- 46

शोध पत्र-गृहविज्ञान

ठोस अवशिष्ट पदार्थ और पर्यावरण

* डॉ. भारती दूबे

* प्राध्यापक, गृहविज्ञान विभाग, शा. गृह विज्ञान स्नातकोत्तर महाविद्यालय, होशंगाबाद (म.प्र.)

November,2012

ifjp; %&

प्रकृति में सजीव–निर्जीव तत्व, सभी में एक सुन्दर सन्तुलन होता है। सारे जीवित–अजीवित घटकों से जैव मण्डल की रचना होती है जिसमें जल, वायु, आकाश, सूर्य, भूमि के अलावा प्रकृति द्वारा प्रदत्त सभी जीवित–अजीवित, जड़, चेतन, पेड़–पौधे, पशु–पक्षी एवं सूक्ष्म जीवों, प्राकृतिक सम्पदा पर्यावरण के अन्तर्गत हैं। पर्यावरण हिन्दी के दो शब्दों परि एवं आवरण से मिलकर बना है। परि का अर्थ चारों तरफ और आवरण का अर्थ घेरा अर्थात् प्रकृति में चारों ओर जो परिलक्षित होता है। पर्यावरण विज्ञान एक वृहत् विज्ञान है। पर्यावरण जीवन का आधार है। पर्यावरण सम्पूर्ण जीव जगत का आधार है एवं मानव के आर्थिक एवं सांस्कृतिक विकास का सदैव सहायक रहा है। अनुकूल पर्यावरण जहाँ विकास में सहायक होता है वहीं प्रतिकूलता विकास को अवरूद्ध कर देती है।

in"k.k dk dkj.k %&

पर्यावरण प्रदूषण आज विश्व की सबसे ज्वलन्त समस्या है। यह एक अन्तर्राष्ट्रीय समस्या है जिसकी चपेट में आज विश्व का प्रत्येक देश आता जा रहा है। भारतवर्ष में यह समस्या अत्यन्त गंभीर रूप लेती जा रही है। समय के साथ बढ़ती आबादी, शहरीकरण, औद्योगिकीकरण आदि प्रदूषण के प्रमुख कारण हैं। हमारे पर्यावरण को अनेकोनेक चीजें दूषित कर रहीं हैं जो हमारे स्वास्थ्य के ऊपर प्रतिकूल प्रभाव डाल रही हैं। इन्हीं चीजों में प्रमुख रूप से ठोस अवशिष्ट पदार्थ भी है जो हमारे जीवन के लिए खतरनाक साबित हो रहे हैं। हम अपने चारों ओर देखे तो यह ठोस अवशिष्ट पदार्थ हमें दिखाई देते हैं अवशिष्ट पदार्थ वे हैं जिनका उपयोग करके फेंक दिया जाता हैं।

आज के इस भौतिकवादी युग में विकसित पश्चिमी देशों की प्रयोग करों एवं फेंकों संस्कृति पनप रही है। इसका प्रभाव आज विकाशील देशों पर भी दिखाई दे रहा है। यह प्रयोग करो और फेंकों की संस्कृति पर्यावरण को बहुत अधिक प्रदूषित कर रही है।

Bkl vof'k"V inkFkksa dk idkj %&

1-&नगरपालिका के अवशिष्ट पदार्थ

2-&खतरनाक अवशिष्ट पदार्थ

3-&बायो मेडिकल या अस्पताल के अवशिष्ट पदार्थ

1-&uxjikfydk dk vof'k"V inkFk %&&इसके अन्तर्गत घरों का कचरा, निर्माण और ध्वन्स, स्वच्छता एवं सड़कों का कचरा आदि सम्मिलित हैं। औद्योगिकीकरण, शहरीकरण, खानपान की शैली में परिवर्तन आदि से इस प्रकार का कचरा बढ़ रहा है।

¼v½ भोज्य पदार्थों की पैकिंग में उपयोग किये जानें वाले पदार्थ जैसेः– पॉलिथिन, एल्युमिनियम क्वाइल,प्लास्टिक के डिब्बे, पानी की बोतल आदि पर्यावरण को अत्यन्त नुकसान पहुँचा रहे हैं क्योंकि यह पदार्थ नष्ट नहीं होते हैं।

¼c½ निर्माण कार्यों में प्रयुक्त होने वाले पदार्थ भी प्रदूषण फैलाते हैं क्योंकि निर्माण कार्य के पश्चात् कुछ पदार्थ शेष रह जाते हैं। सभी प्रकार की इमारतों के ध्वस्त करनें के पश्चात् भी मलवा शेष रहा जाता है जो पर्यावरण को प्रदूषित करता है।

¼l½ नगरपालिका घरों के कचरे को गाड़ियों में भरकर शहर से बाहर फेंक देती है जिससे उस स्थान पर गंदगी, बदबू फैल जाती है क्योंकि इस कचरे में पॉलिथिन, प्लास्टिक आदि भी होता है जो नष्ट नहीं हो पाता। इसके अतिरिक्तक खुले नाले, नालियाँ आदि भी वातावरण को दूषित करते हैं इनमें अनेंकों हानिकारक जीव–जन्तु पनप कर बीमारियों को फैलाते हैं साथ ही इनमें रूका हुआ कचरा बाढ़ के खतरे को भी बढ़ाता है।

¼n½ सड़कों पर पड़ा हुआ कचरा भी वातावरण को दूषित करता है। लोग सड़कों पर अनेकों प्रकार का कचरा फेंक देते हैं इसके साथ ही सब्जियों के बाजार से भी गंदगी फैलती है शेष बची हुई सड़ी–गली सब्जियाँ, फल आदि दुर्गन्ध को फैलाकर सम्पूर्ण पर्यावरण को दूषित करते हैं।

2-&[krjukd vof'k"V inkFk %&&

यह जहरीला होता है जो पेड़–पौधों, जानवरों, मनुष्यों के लिए हानिकारक है। कुछ पदार्थ ज्वलनशील, विस्फोटक होते हैं जो पर्यावरण के अलावा मनुष्य एवं जानवरों के लिए हानिकारक हैं।

इसके अन्तर्गत जो पदार्थ आते हैं वे हैं –

¼v½?kjyw vof'k"V %& इसके अन्तर्गत पुरानी बैटरी, शू–पॉलिश, पेन्ट के टिन, पुरानी मैगजीन,बोतल आदि सम्मिलित हैं।

¼c½ vLirky dk vof'k"V %& इसके अन्तर्गत रासायनिक पदार्थ, पट्टियाँ, प्लास्टर, रूई, निःसंक्रामक पदार्थ, पुरानी दवाईयाँ, सिरिंज, पुराने इंजेक्शन आदि सम्मिलित हैं।

¼l½ vk|kfxd vof'k"V %& इसके अन्तर्गत धातुयें, रासायनिक पदार्थ, पेपर्स, कीटनाशक, डाई, रबर से बनी चीजें आदि सम्मिलित हैं।

3-&ck;kefMdy vof'k"V inkFk ¼&

इसके अन्तर्गत ऑपरेशन में प्रयोग आने वाले उपकरण, विभिन्न रोगों की जाँच में प्रयोग आने वाली चीजों जैसे :– एक्स–रे फिल्म, एम.आर.आई. फिनाइल, पुरानी दवाईयाँ, कैमिकल्स, सिरिंज, पट्टियाँ, मानव रक्त,मानव से उत्सर्जित होने वाले पदार्थ सम्मिलित हैं।

अवशिष्ट पदार्थ पर्यावरण को प्रदूषित करते हैं इसलिए इन पदार्थों के निस्तारण की समुचित व्यवस्था की जानी चाहिए। विकसित देशों में अवशिष्ट पदार्थों को मशीनों से इकट्ठा करने के लिए स्वचलित मशीनों की व्यवस्था है किन्तु छोटे शहरों, कस्बों,गाँवों में समुचित व्यवस्था नहीं है। साथ ही गाँवों और कस्बों में सीवेज की अपनी समस्या है। भारत में कचरा उठानें का दायित्व नगर निगम या नगर पालिका का है, किन्तु नगर पालिका, नगर निगम आपना दायित्व का निर्वहन ठीक ढंग से नहीं कर पाती है, परिणामतः शहर, गली, मोहल्ले, सड़कों पर कचरे का नजर आना है। घरों के लोग भी कचरे को पॉलीथिन आदि में भरकर सड़क पर फेंक देते हैं जिसे जानवर खा लेते हैं जिससे उनकी असमय मृत्यु हो जाती है। साथ ही अनेकों खतरनाक बीमारियाँ जैसेः– मलेरिया, डेंगु, स्वाइन फ्लु, चिकनगुनिया, हैजा आदि फैल जाती है। उक्त विस्फोटक स्थिति में नगर निगमों, नगर पालिकाओं की उदासीनता के कारण सर्वोच्च न्यायालय ने भारत सरकार को नगरीय अवशिष्ट प्रबंधन के लिये अधिनियम लागू करने एवं उसे समय सीमा निर्धारित करने के निर्देश दिये हैं। जिसके अन्तर्गत दिशा निर्देश दिये गये–

¼1½ नगरीय अवशिष्ट को संग्रहित करना।
¼2½ जैविक कचरा एवं अन्य कचरे को अलग–अलग इकट्ठा करना।
¼3½ कचरे को नियत स्थान पर डालना।
¼4½ कचरे के परिवहन की व्यवस्था करना।
¼5½ कचरे को नष्ट करना।

संदर्भ ग्रंथ

¼1½ पर्यावरण चेतना – प्रो.धनन्जय वर्मा, हिन्दी ग्रन्थ अकादमी
¼2½ पर्यावरण तथा प्रदूषण – डॉ. अरूणा रघुवंशी और चन्द्रलेखा रघुवंशी
¼3½ हमारा पर्यावरण – श्री अनिल अग्रवाल,सुनीता नारायण
¼4½ प्रदूषण के कारण और निवारण– डॉ. प्रभात कुमार ''योजना–93''